अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन

* लखन बोहने , शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक, भिलाई मैत्री कॉलेज, भिलाई (छ.ग.)

* * डॉ. सोनिया पोपली, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापिका, सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके लिए न्यादर्श के रूप में कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् छःसौ विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। इसमें सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों से तीन सौ तीन सौ विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन संबंधी अधिगम शैली मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अधिगम शैली अनुसूची तथा अध्ययन आदत मापन हेतु डॉ. एम. मुखोपाध्याय एवं डॉ. डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत मापनी का प्रयोग किया गया है। शोधपत्र में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु दो चरिता विश्लेषण (2x2 Factorial Design ANOVA) सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया। है। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है अधिगम शैली का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव पाया गया जबकि लिंग का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक विद्यार्थी में पाठ्यवस्तु को ग्रहण करने की अलग–अलग शैली होती है। जैसे–देखकर, सुनकर, पढ़कर, लिखकर एवं क्रिया करके। प्रत्येक बालक की एक विशिष्ट शैली होती है जिसे वह प्रयोग कर उत्तम अधिगम करता है। बालक जब किसी कार्य को स्वयं करके देखता है तो वह उस कार्य को जल्दी सीख लेता है। जिससे बालक के मन में कार्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होने लगता है। यही जिज्ञासा बालक को गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है।

डेनिज, एस. (2013) ने "विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली का संबंध" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 412 विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया और निष्कर्ष में पाया गया कि अधिगम शैलियों के विभिन्न आयामों का अध्ययन आदतों के साथ धनात्मक सहसंबंध थे। **उनाल (2014)** ने "अधिगम शैली और सीखने के प्रदर्शन पर दूरस्थ विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के प्रभाव का विश्लेषण" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया गया। परिणामों से पता चला है कि अधिगम शैली, अध्ययन आदतों एवं सीखने के प्रदर्शन के बीच सार्थक संबंध पाया गया। **गार्नर और हरीशन (2013)** ने "अधिगम शैली और अध्ययन आदत का रसायन विज्ञान के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव" पर शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि छात्रों के बीच अंतर्मुखी, अनुभव करना, सोच और पहचानने में सीखने की शैली सबसे अधिक प्रचलित थी तथा छात्रों के स्तर के आधार पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, अधिगम शैलियों एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सांख्यिकी अंतर नहीं पाया गया।

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में बालक अपनी अधिगम शैली को स्पष्ट रूप से पहचान नही पाता है जिसके कारण उसे किसी भी विषय को सीखने, समझने एवं प्राप्त करने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और वह उस क्षेत्र में पिछड़ जाता है अगर बालक अपनी सीखने की शैली को पहचान ले तो उस क्षेत्र में उसे निश्चित सफलता मिलेगी। अतः अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है कि लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया किस प्रकार अध्ययन आदत को प्रभावित करता है। इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखते हुए **"अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन"** को शोध विषय के रूप में चयनित किया गया।

अधिगम शैली :

"अधिगम शैली सीखने की वह विधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी पाठ्य–वस्तु को अपनी रूचि के अनुसार, बिना किसी बाधा के आसानी से ग्रहण कर लेता है उसकी अधिगम शैली कहलाती है।"

अध्ययन आदत :

अनुसंधानकर्ता ने अध्ययन आदत की विभिन्न परिभाषाओं की समीक्षा की और इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि बालक जब दूसरे के शब्दों को या लिखित सामग्री को ग्रहण करता है और उनका लाभ उठाता है तो यह प्रक्रिया अध्ययन कहलाती है। इन्हीं शब्दों या लिखित सामग्री को बार–बार अभ्यास करने पर वह स्वतः संचालित होने लगती है, जो बालक के लिए आदत बन जाती है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर शोधकर्ता यह कह सकता है कि विद्यार्थी जब दूसरे के शब्दों को या विषयवस्तु को निरीक्षण, चिंतन, द्वारा ग्रहण करता है और इसे बार–बार अभ्यास करने पर वह स्वतः संचालित होने लगती है, तो यह अध्ययन आदत कहलाती है।

उद्देश्य

अधिगम शैली का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना

परिकल्पना

अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

विधि

शोध समस्या की प्रकृति को देखते हुये शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सूची में से तकरीबन सात माध्यमिक विद्यालयों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया। इस तरह से इन सात माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों के समूह पर प्रस्तुत शोध क्रियान्वित किया गया। उसी प्रकार गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सूची में से सात माध्यमिक विद्यालयों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया और इन सात विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों के समूह पर प्रस्तुत शोध क्रियान्वित किया गया। इस प्रकार 14 सरकारी एवं गैर

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया।

तालिका क्रमांक 1 : न्यादर्श का योजनाबद्ध विवरण

कक्षा	सरकारी विद्यालय			गैर सरकारी विद्यालय			कुल
	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	कुल योग
आठवीं	150	150	300	150	150	300	600

शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अधिगम शैली मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन आदत के लिए एम मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल (1983) द्वारा निर्मित मानकीकृत अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का एकत्रीकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रदत्तो का संकलन शोधकर्ता द्वारा सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर अलग–अलग दिनों में किया गया।

शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिये सर्वप्रथम विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अपने शोध में प्रयुक्त उपकरणों को उनके माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों पर प्रशासित करने की अनुमति मांगी। तत्पश्चात् सम्बन्धित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं से मिलकर उनसे सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये और उनसे परिचय प्राप्त करने के बाद शोधकर्ता ने स्वयं का परिचय देते हुए एवं उनके विद्यालय में आने का अपना उद्देश्य बताया जिसके पश्चात् उपस्थित शिक्षकों ने सहर्ष सहयोग देने की बात कही।

शोधकर्ता द्वारा कक्षा आठवीं के प्रत्येक विद्यार्थियों को अधिगम शैली अनुसूची एवं अध्ययन आदत अनुसूची की एक–एक प्रति प्रदान की गई। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा दोनों उपकरणों में अनुक्रिया देने की विधि को सविस्तार वर्णन करके समझाया गया।

प्रथम सरकारी विद्यालयों के कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से संपर्क किया गया। इन विद्यार्थियों को शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अधिगम शैली अनुसूची की एक–एक प्रति प्रदान की गयी। तत्पश्चात् इस अनुसूची में अनुक्रिया दर्ज करने की प्रक्रिया को विस्तार से

समझाया गया। उन्हे बताया गया कि आपको सीखने की शैली से संबंधित एक प्रपत्र दिया जा रहा है जिसमें दृश्य, श्रव्य एवं स्पर्शनीय अधिगम शैली से संबंधित कुल 45 कथन दिये गये है। सबसे पहले तुम्हे इस प्रपत्र में अपना नाम, उम्र, कक्षा व लिंग भरना है, फिर प्रत्येक वाक्य या कथन को ध्यान से पढ़ना है प्रत्येक कथन एक या अन्य प्रकार की अधिगम शैली को व्यक्त करता हैं, अतः आप अपने संबंध में जैसा महसूस करते हैं उसी के अनुसार कथन के सामने बने पॉच विकल्पों, जो कि क्रमशः **सदैव** (Always), **प्रायः** (Often), **कभी–कभी** (Sometimes), **शायद कभी** (Rarely) **तथा कभी नहीं** (Never) वाले प्रत्युतरों को इंगित करते हैं, में से किसी एक खाने में सही (√) का चिन्ह लगा दें। इसी प्रकार, सभी कथनों का उत्तर देवें एवं कोई भी कथन न छोड़ें। इसमें सही/गलत कुछ नहीं हैं, इसलिए निःसंकोच अपनी राय या पसंद व्यक्त करें। आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे। कुछ कथनों में आपको ऐसे शब्द नहीं मिलेगे जैसे आप चाहते हो, फिर भी प्रत्येक कथनों में से जो आपको सबसे ठीक लगे उन्हे सही का चिन्ह लगाना है, अगर आपको किसी शब्द का अर्थ मालूम नहीं है तो आप तुरंत पूछ सकते हो एक ही वाक्य या कथन पर ज्यादा समय नहीं लेना है। उन्हे बताया गया है कि इस प्रपत्र की कोई समय सीमा नहीं है फिर भी आप इन्हे जल्द से जल्द भरे। विद्यार्थियो द्वारा प्रपत्र भरे जाने के बाद उन्हे एकत्र करके जमा किया गया। इसी तरह सभी सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अधिगम शैली का मापन किया गया।

प्रदत्तों का संकलन से संबंधित दूसरा प्रपत्र अध्ययन आदत अनुसूची है। कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मापन हेतु डा. एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल (1983) द्वारा निर्मित प्रपत्र दिया गया और उन्हे बताया गया कि इस प्रपत्र में कुल 70 प्रश्न है। इस सूची में अध्ययन सम्बन्धी आदतों के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कुछ कथन दिए गए हैं। प्रत्येक कथन एक या अन्य प्रकार के आदत को व्यक्त करता है। आपने इन आदतों को किसी निश्चित मात्रा तक विकसित किया है, अतः आप अपने संबंध में जैसा महसूस करते हैं उसी के अनुसार कथन के सामने बने पाँच विकल्पों, जो कि क्रमशः **सदैव** (Always), **बहुधा** (frequently), **कभी–कभी** (sometimes), **शायद कभी** (rarely) **तथा कभी नहीं** (never) वाले प्रत्युतरों को इंगित करते हैं, में से किसी एक खाने में क्रॉस (**x**) का चिन्ह लगा दें। इसी प्रकार, सभी कथनों का उत्तर देवें एवं कोई भी कथन न छोड़ें। इसमें सही/गलत कुछ नहीं हैं, इसलिए निःसंकोच अपनी राय व्यक्त करें। आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे। इन

प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कोई निश्चित समय सीमा नहीं है। विद्यार्थियों ने अनुसूची में अंकित 70 प्रश्नों को हल करने के लिए 45 मिनट का समय लिया। 45 मिनट बाद सभी प्रपत्रों को वापस ले लिया गया। इस तरह से विद्यार्थियों के द्वारा दिये गये उत्तरों के आधार पर उनके अध्ययन सम्बन्धी आदतों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली गई।

इसी विधि द्वारा सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं अध्ययन आदतों से संबंधित प्रदत्त संकलित कर शोधार्थी ने प्रदत्त एकत्रीकरण की प्रक्रिया को पूर्ण किया।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग :

प्रस्तुत शोध में संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये दो चरिता विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' करना था। इस उद्देश्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये दो चरिता विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया। इस विश्लेषण के परिणाम तालिका क्रमांक 2 में दिये गये है।

Table No. 5.36: Summary of 2x2 Factorial Design ANOVA for Study Habits

Source of Variance	Sum of Squares	df	Mean sum of Squares	F	Sig.
Learning Styles	41426.387	1	41426.387	79.451	.000**
Gender	510.842	1	510.842	.980	.323
Learning Styles x Gender	85.401	1	85.401	.164	.686
Error	310758.660	596	521.407		
Total	1.767E7	600			

** = 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि अध्ययन आदतों के लिये F मूल्य का मान 79.451, df = 1/596 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को अस्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम शैली का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि अध्ययन आदतों के लिये F मूल्य का मान .980, df = 1/596 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि विद्यार्थियों की लिंग का उनकी अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को स्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लिंग का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि अध्ययन आदतों के लिये F मूल्य का मान .164, df = 1/596 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को स्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :

अधिगम शैली का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव पाया गया परंतु लिंग का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया जबकि अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

विवेचना :

वर्तमान समय में शिक्षक द्वारा अधिगम के दौरान दृश्य, श्रव्य एवं स्पर्शनीय सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है जिससे विद्यार्थियों को विषयवस्तु को समझने में आसानी होती है जिससे उनकी अध्ययन की आदतों में निश्चित रूप से वृद्धि पायी गयी हैं। अतः

विद्यार्थी किसी भी विषयवस्तु से संबंधित अध्यापक के शारीरिक हावभाव, मुख मुद्राये श्यामपट्ट कार्य, मॉडल, प्रोजेक्टर आदि को देखते हुए उसे दृश्य रूप में ग्रहण करते हुए अध्ययन करते है तो उनमें समझने की योग्यता विकसित होती है इसलिए अधिगम शैली का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव पाया गया। **डेनिज (2013) एवं उनाल (2014)** ने भी इसी परिणाम की पुष्टि की है कि अधिगम शैली का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर धनात्मक संबंध पाया जाता है किंतु **गार्नर और हरीशन (2013)** ने इसके विपरीत परिणाम प्राप्त किये।

शैक्षिक निहितार्थ :

दृश्य अधिगम शैली से सीखने वाले विद्यार्थी इतिहास में घटनाओं का एक नक्शा तैयार कर सकते है या वैज्ञानिक प्रक्रिया को आकर्षित कर सकते हैं। ऐसे विद्यार्थी किसी भी विषयवस्तु या घटना से संबंधित चार्ट बना सकते हैं, ग्राफ, चित्र, मॉडल बना सकते हैं, हाइलाइट्स का उपयोग कर सकते हैं, शब्दों को रेखांकित कर सकते हैं, नोट्स बना सकते है। श्यामपट्ट कार्य, अध्यापक के शारीरिक हावभाव, मुख मुद्राये आदि को देखते हुए उसे अपने स्मृति पटल में संग्रहित करके रख सकते है।

श्रव्य अधिगम शैली से सीखने वाले विद्यार्थी शब्द एसोसिएशन, व्याख्यान, रिकार्ड, परिचर्चा, सेमीनार, वीडियों सुन सकते हैं, समूह चर्चा, नोट्स तैयार कर सकते हैं, ये किसी विषयवस्तु को जोर जोर से बोलते है और स्वयं की आवाज को सुन सकते हैं आदि।

स्पर्शीय विद्यार्थी छोटे संभागो में अध्ययन कर सकते हैं, प्रयोगशाला में भाग ले सकते हैं, असाइंमेंट तैयार कर सकते हैं, स्थानीय भ्रमण कर सकते हैं, कार्यशाला में भाग ले सकते हैं, कक्षाओं में प्रदर्शन कर सकते हैं, संग्रहालयों का दौरा करना तथा स्वयं को स्वयं के द्वारा सीखने के लिए प्रेरित करते है आदि। विद्यार्थी अपनी अध्ययन आदतों में सुधार कर सकते हैं और अध्ययन के कमजोर क्षेत्रों को मजबूत कर सकते हैं। शिक्षक स्वयं की पंसदीदा सीखने की शैली का पता लगा सकते हैं जो अक्सर प्रमुख सीखने की शैली बन जाती है। शिक्षक बेहतर सीखने के लिए छात्रों की सीखने की शैली का पता लगा सकते हैं। माता–पिता को विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए ताकि उनके बच्चे को अध्ययन से संबंधित अच्छी आदतों एवं सीखने में सबसे अच्छा मदद मिल सके।

संदर्भित ग्रंथ–सूची

देनीज, एस. (2013) एनालिसिस आफ स्टडी हेबीटस एण्ड लर्निंग स्टाईल इन यूनीवर्सिटी स्टूडेन्टस, कास्तोमोनु एजुकेशन जरनल, वोल्युम, 21(1), 287–302

दानो,जे.सी. (2017) लर्निंग स्टाइल, स्टडी हेबीट्स एण्ड अकादमिक परफारमेंस आफ नर्सिंग स्टूडेन्टस. द मलेशियन जरनल आफ नर्सिंग, वोल्युम, 8(4),26–35

गार्नर,एल.डी. और हरीशन,एस. (2013) एन इनवेस्टिगेशन आफ द लर्निंग स्टाइल एण्ड स्टडी हेबीटस आफ केमेस्ट्री अण्डरग्रेजुएट्स इन बारबादोस एण्ड देयर ईफेक्ट एस प्रेडिक्टर आफ अकादमिक एचीवमेन्ट इन केमिकल ग्रुप थ्योरी, जरनल आफ एजुकेशन एण्ड सोसल रिसर्च,वोल्युम, 3(2), 107–122

पाण्डेय, राम शकल (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,पृ.,147–160

पुजु,जे.ए., और खान, एम. (2017) लर्निंग स्टाइलस एण्ड स्टडी हेबीट्स आफ वीजुअली इम्पायरड एण्ड ओरथोपेडिकली चेलेज्ड कॉलेज होईंग स्टूडेण्टस. स्कालरली रिसर्च जरनल फार ह्यूमेनिटी साइंस एण्ड इंग्लिश लेंग्वेज, (एसआरजेएचएसइएल),वोल्युम, 6(30), 8445–8454

सिंह, ए.के.(2013) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन प्रकाशक,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली,पृ.292–304

श्रीवास्तव, डी.एन. एवं वर्मा, पी.(2011) मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा,पृ. 412–435

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा,(2005), पृसं. 41–45, 1(10),143–152

Website-

http://scholar.google.com
http://www.eric.gov.in,
http://www.onlinejournal.com
http://www.learning-style-online.com
https://mhrd.gov.in
http://www.ncert.nic.in